नीला लिफाफा
गुलाबी कागज़

कहानी संग्रह

कुसुम नारायण 'नारायणी'

मनसा पब्लिकेशन्स
2/256 विराम खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-२२६०१०
फोन नं०- (0522) 4029598
ईमेल - manasapublications2007@rediffmail.com

पुस्तक का नाम	**नीला लिफाफा गुलाबी कागज़**
प्रकाशक	**मनसा पब्लिकेशन्स** 2/256 विराम खण्ड गोमती नगर, लखनऊ–226010 फोन नं. 0522–4029598
संस्करण	प्रथम –2008
मूल्य	रुपये मात्र– 175/–
सर्वाधिकार सुरक्षित	**मनसा पब्लिकेशन्स** 2/256, विराम खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ–226010

ISBN- 978-81-906214-8-9

NEELA LIFAFA
GULABI KAGAZ

By- Kusum Narayan 'Narayani'

अपनी बात

मेरी कहानियाँ अपने अनुभवों और अहसासों को जीवंत बनाने की अंत:प्रेरणा में किये गये चिन्तन के परिणाम की कहानियां है।

रचनाधर्मिता के माध्यम से मिली समझ मुझे ओढ़ायी गई नैतिकता से युक्त होकर निजी नैतिकता में जीने की शक्ति और साहस प्रदान करती है।

जब विषमताओं में से कोई निष्ठा या विश्वास उभर आये या दया करुणा की कोई कड़ी चमक जाये या सुन्दर शिष्ट सम्भ्रांत परिवेश के नीचे छिपी कालिमा को उभार लाये या आदर्शों के गहन गम्भीर उदघोषों के नीचे दबी बेबस करुण सिसकी उभार दे वास्तव में वही साहित्य है।

मुझे दलित, महिला, वामपंथी, पूंजीवादी जैसे खेमे में बंटे साहित्य में रुचि नहीं साहित्य जब समग्रता से विकसित होता है तभी वह अपने दर्पण में समाज का सही प्रतिबिम्ब दिखा सकता है।

ये कहानियां काल्पनिक नहीं, देखा-सुना अनुभूत किया सच है। न आडम्बर है न शब्दजाल न काव्यात्मकता, जो मन को स्पर्श कर गया वही कहानी बन गया।

आशा है 'नीला लिफाफा गुलाबी कागज' जिसमें मोबाइल युग से पहले की कहानियां है सुधि पाठकों को आयेगी।

कुसुम नारायण 'नारायणी'

अनुक्रम

१. अपने-अपने आसमान..... 9

२. सपना उनका भी..... 16

३. प्रतीक्षा..... 22

४. रसानुभूति..... 29

७. बच्चा मेरा है..... 36

६. मधु बना विष..... 42

७. नीला लिफाफा गुलाबी कागज़..... 51

८. पहाड़ पर चमकते तारे..... 64

९. जिंदगी अपनी-अपनी..... 70

१०. हत्यारिन..... 80

११. शोपीस..... 91

१२. गुझिया मीठी है..... 96

१३. प्रतिध्वनि..... 103

१४. लक्ष्मी..... 110

१५. गांठ..... 117

१६. सिद्ध पुरुष..... 126

अदित्य एवं सुषमा को

करना ठीक नहीं समझते।

बुआ अपने सौम्य, सुंदर, सुयोग्य भतीजे को पागलपन के कगार पर लाने के लिये स्वयं को दोषी मानती हैं, आंसू बहाती हैं कहती हैं–"काश मुझे सपना भी होता कि मेरा प्यार यह रूप लेगा मेरे लाड की ऐसी परिणति होगी....।"

•••

नीला लिफाफा गुलाबी कागज़

सुरंग आती रहती और नीलिमा उन्हें गिनती जाती, उसे यों तो अच्छी तरह मालूम है कि कालका से शिमला जाने में कितनी सुरंगों से गुज़र कर जाना पड़ता है, फिर भी यह उसकी बचपन की आदत है। बचपन में इस रास्ते पर जाते हुये सुरंग का गिनना, डरने का अभिनय करना नीलिमा और उसके भाई–बहनों का खेल होता और लगातार खिड़की से बाहर निहारते जाते। अब इन पहाड़ों में न वह हरियाली रही न वह सुषमा।

उदासी से उन पहाड़ों का जादू याद करते सुरंग आने पर अन्दर देखने लगी थी, सामने बैठी युवती को अपनी ओर देखते पाया तो लगा पहले कभी देखा है। कौन हो सकती है, सोचते–सोचते विस्मृति की सुरंग पार कर स्मृति के उजाले में याद आया.....यह युवती तो मेघा है.....मेघा तभी बड़ा पहचाना सा चेहरा लग रहा है।

उसके होठों पर भी मुस्कान आई, वह पहले भी उसकी ओर देखती रही थी।

"आप नीला चाची हैं न, नीति की मम्मी?"

"और तुम मेघा हो न? तुम्हें देखे तो एक जमाना बीत गया।"

"फिर भी मेरी याद आ गई आपको चाची!"

"याद तो रहती है बेटा..... तुम नीति की सहेली थीं–इतने वर्षों तुम्हारा आना–जाना रहा नीति के पास तो हम भूले तो नहीं पर कुछ परिवर्तन तो हो ही गया तब किशोरी कन्या थी तुम, फिर विवाह हुआ। मुझे